।। सप्त गुरा को अंग ।।मारवाडी + हिन्दी( १-१ साखी)

महत्वपूर्ण सुचना-रामद्वारा जलगाँव इनके ऐसे निदर्शन मे आया है की,कुछ रामस्नेही सेठ साहब राधािकसनजी महाराज और जे.टी.चांडक इन्होंने अर्थ की हुई वाणीजी रामद्वारा जलगाँव से लेके जाते और अपने वाणीजी का गुरु महाराज बताते वैसा पूरा आधार न लेते अपने मतसे,समजसे,अर्थ मे आपस मे बदल कर लेते तो ऐसा न करते वाणीजी ले गए हुए कोई भी संत ने आपस मे अर्थ में बदल नहीं करना है। कुछ भी बदल करना चाहते हो तो रामद्वारा जलगाँव से संपर्क करना बाद में बदल करना है।

\* बाणीजी हमसे जैसे चाहिए वैसी पुरी चेक नहीं हुआ, उसे बहुत समय लगता है। हम पुरा चेक करके फिरसे रीलोड करेंगे। इसे सालभर लगेगा। आपके समझनेके कामपुरता होवे इसलिए हमने बाणीजी पढनेके लिए लोड कर दी।

राम	।। राम नाम लो, भाग जगाओ ।। ।। राम नाम लो, भाग जगाओ ।।	राम
राम	।। अथ सप्त गुरा को अंग लिखंते ।।	राम
राम	॥ साखी ॥ बाप माय गुरू पेल है ॥ सुणज्यो सब संसार ॥	राम
राम	रगत बुंद सुखराम क्हे ।। बिगसी धात बिचार ।।१।।	राम
राम	बुंद इससे मनुष्य देह बना । पिता का धातू नही निकलता था तो मनुष्य देह मिलता ही	राम
राम	नहीं था । इसलिए माता पिता ये पहले गुरु है ।।।१।।	राम
राम	lacksquare	राम
राम	, , , , , , , , , , , , , , , , , , , ,	राम
राम	माता दस दिन देह का पालन करती है । अन्न जल मुख में देती है ।।।२।।	राम
राम	मात पिता गुर अे सही ।। तिण मे फेर न सार ।।	राम
	मीख मिले सुखराम के ।। वे गुरू और बिचार ।।३।।	
	इस प्रकार माता व पिता ये पहले गुरु है । इसमे कोई फरक नही समजो परन्तु काल से	
	मोक्ष मिलता वह गुरु माता पिता इन पहले गुरुसे न्यारा है उसका सभी ने विचार करना	राम
राम	ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बोले ।।।३।।	राम
राम	दुजो गुरू सुखराम के ।। दाई है जुग माय ।।	राम
राम	मळ मुत्र सुं काड कर ।। लीयो कंठ लगाय ।।४।। आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बोले,जगत मे हर किसी का दुजा गुरु दाई है । दाई	राम
	जीवको मल मुत्र से निकालकर कंठको लगाती है ।।।४।।	राम
	दस दिन कर हे चाकरी ।। न्हाय झुलावे आण ।।	
राम	दाई गुर सुखराम केह ।। इता गुणा बखाण ।।५।।	राम
राम	दस दिन नहलाना,मल मुत्र से साफ करना,झुले मे सुलाना,झुलाना आदि काम करती है	राम
राम	11411	राम
राम	दाई गुरू गुण ओ किया ।। सुणज्यो सब संसार ।।	राम
राम	पार लंघे सुखराम के ।। सो गुरू करो बिचार ।।६।।	राम
राम	इसलिए दाई यह सभी नर नारीयों का दुजा गुरु है। दाई ये उपरोक्त सभी गुण करती है	राम
राम	परन्तु पार नहीं लंघा सकती । सुख पानेके लिए काल के पार लंघाऐंगे ऐसे गुणधारी	राम
	तत्तुर यम विवार यम् रता जादि तत्तुर सुखरानणा नहाराण वालामदम	
राम	तीजा गुर सुखराम के ।। बिपर कहिये जाण ।।	राम
राम	वे दाता इंण बस्त का ।। नाव कडावे आण ।।७।। आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बोले बिप्र यह सभी नर नारीयोका तीजा गुरु है । वह	राम
राम	शरीर का नाम निकालने का दाता है।।।७।।	राम
राम	אומו אמ וויו ויויטוו פוווטוו	राम

अर्थकर्ते : सतस्वरूपी संत राधाकिसनजी झंवर एवम रामरनेही परिवार, रामद्वारा (जगत) जलगाँव - महाराष्ट्र

बामण गुरू सुखराम के ।। इण देहि का होय ।।  पाम  पाम  पाम  पाम  पाम  पाम  पाम  प	l राम
राम राम जिसमे जन्म मरण मिटाने का गुण है उसे सभी नर नारी पुजो ।।।।।  राम जिसमे जन्म मरण मिटाने का गुण है उसे सभी नर नारी पुजो ।।।।।  रह को पाडयो नाम रे ।। ओ फळ दियो बिचार ।।९।।  इसप्रकार आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज सभी नरनारीसे बोले,ब्राम्हण ने देह ना का फल दिया ।।।९।।  राम मात पिता गुर बुंद का ।। दाई गुरू सम्पडाय ।।  बाम्हण गुरू सुखराम के ।। नाव पडायो आय ।।१०।।  माता-पिता ने देह देनेका फल दिया,दाई ने शरीर को नहलाया,धुलाया,साफ रखनेका फल दिया,ब्राम्हण ने देह नाम देने का फल दिया इसप्रकार देह के तीन गुणा।  राम अं तीनुं गुरू हद का ।। बेहद का गुर नाय ।।  बाम्हण सुखराम के ।। जती बेद का कुवाय ।।१९।।  पाम माता-पिता,दाई,ब्राम्हण ये तिनो गुरु हदके सुख देनेवाले है । बेहद का सुख देनेवाल है । ब्राम्हण वाद के आधारसे नाम व जात बताते ।।।१९।।  अं गुर तो सुखराम के ।। यां चीजा का जाण ।।१२।।  अवादि सतगुरु सुखरामजी महाराज बोले ब्राम्हण वेद के आधारसे जाती बताते इसप्रकार ब्राम्हण नाम व जाती का ज्ञान देते । इसप्रकार ये तिनो गुरु उपरोक्त हि है मोक्ष देनेवाले नही है ।।।१२।।  अवायस सांमी ढुंढिया ।। बेरागी गुरू जाण ।।  अं बगसे सुखराम के ।। साँग पदार्थ आण ।।१३।।  अवायस,स्वामी ढुंढिया ।। बेरागी गुरू जाण ।।  अं बगसे सुखराम के ।। साँग पदार्थ आण ।।१३।।  पाम अंकूं को गुण करत है ।। सब ही हद का आण ।।१४।।  इसप्रकार के ब्राम्हण पकड़के षट दर्शनी सभी गुरु देहके गुरु है । ये सभी हद मे रर एक मात्र गुण करते है ।।।१४।।  पाम पाम गुण करते है ।।।१४।।	राम
पाम पराम पराण मिटाने का गुण है उसे सभी नर नारी पुजो ।।।।।  प्राप्त प्राप्त पुरु पुखराम के ।। सुनज्यो सब नर नार ।।  देह को पाडयो नाम रे ।। ओ फळ दियो बिचार ।।९।।  इसप्रकार आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज सभी नरनारीसे बोले,ब्राम्हण ने देह ना का फल दिया ।।।९।।  पाम मात पिता गुर बुंद का ।। दाई गुरू सम्पडाय ।।  प्राप्त प्राप्त पुरु सुखराम के ।। नाव पडायो आय ।।१०।।  पाम पाना-पिता ने देह देनेका फल दिया,दाई ने शरीर को नहलाया,धुलाया,साफ रखनेका फल दिया,ब्राम्हण ने देह नाम देने का फल दिया इसप्रकार देह के तीन गुणा।।  पाम अं तीनुं गुरू हद का ।। बेहद का गुर नाय ।।  ब्राम्हण सुंखराम के ।। जती बेद का कुवाय ।।१९।।  पाम ब्राम्हण वंद के आधारसे नाम व जात बताते ।।।१९।।  प्राप्त अं गुर तो सुखराम के ।। यां चीजा का जाण ।।१२।।  पाम अं गुर तो सुखराम के ।। यां चीजा का जाण ।।१२।।  पाम अं बगसे सुखराम के ।। साँग पदार्थ आण ।।  अं बगसे सुखराम के ।। साँग पदार्थ आण ।।१३।।  अायस सांमी ढुंढिया ।। बेरागी गुरू जाण ।।  अं बगसे सुखराम के ।। साँग पदार्थ आण ।।१३।।  पाम आयस,स्वामी ढुंढीया,बैरागी इन्हे गुरू कहते है आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बं गुरु जनके साँग याने जनके देहके भेष का ज्ञान देते है ।।।१३।।  पाम अंकूं को गुण करत है ।। सब ही हद का आण ।।१४।।  पाम इसप्रकार के ब्राम्हण पकड़के षट दर्शनी सभी गुरु देहके गुरु है । ये सभी हद मे रर एक मात्र गुण करते है ।।।१४।।  पाम पात्र पात्र गुण करते है ।।।१४।।  पाम पात्र पात्र गुण करते है ।।।१४।।  पान पात्र गुण करते है ।।।१४।।	राम
शाम्हण गुरू सुखराम के ।। सुनज्यो सब नर नार ।।	। ता <b>राम</b>
दह को पाडयो नाम रे ।। ओ फळ दियो बिचार ।। १।।  इसप्रकार आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज सभी नरनारीसे बोले,ब्राम्हण ने देह ना का फल दिया ।।। १।।  पाम पाम पाम पान पिता गुर बुंद का ।। दाई गुरू सम्पडाय ।।  ब्राम्हण गुरू सुखराम के ।। नाव पडायो आय ।। १०।।  माता – पिता ने देह देनेका फल दिया, दाई ने शरीर को नहलाया, धुलाया, साफ रखनेका फल दिया,ब्राम्हण ने देह नाम देने का फल दिया इसप्रकार देह के तीन गु ।।। १।।  पाम अं तीनुं गुरू हद का ।। बेहद का गुर नाय ।।  ब्राम्हण सुंण सुखराम के ।। जती बेद का कुवाय ।। १९।।  पाम पाम पाम पाम पाम पाम वान – पिता, दाई,ब्राम्हण ये तिनो गुरु हदके सुख देनेवाले है । बेहद का सुख देनेवाले है । ब्राम्हण पोड नांव रे ।। जती पढावे आण ।।  अं गुर तो सुखराम के ।। यां चीजा का जाण ।। १२।।  अादि सतगुरु सुखरामजी महाराज बोले ब्राम्हण वेद के आधारसे जाती बताते समझण ब्राम्हण नाम व जाती का ज्ञान देते । इसप्रकार ये तिनो गुरु उपरोक्त वि है मोक्ष देनेवाले नहीं है ।। १२।।  आयस सांमी ढुंढिया ।। बेरागी गुरू जाण ।।  अं बगसे सुखराम के ।। साँग पदार्थ आण ।। १३।।  पाम पाम पाम पाम पाम पाम पाम पाम पाम पा	राम
इसप्रकार आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज सभी नरनारीसे बोले,ब्राम्हण ने देह ना का फल दिया ।।।९।।  पाम पाम पाम पाम पाम पाम पाम पाम पाम पा	राम
मात पिता गुर बुंद का ।। दाई गुरू सम्पडाय ।।  पाम  पाम  पान पिता गुर बुंद का ।। दाई गुरू सम्पडाय ।।  प्राम पान पिता ने देह देनेका फल दिया,दाई ने शरीर को नहलाया,धुलाया,साफ रखनेका फल दिया,ब्राम्हण ने देह नाम देने का फल दिया इसप्रकार देह के तीन गुणा।।  पाम  पाम  प्राम अं तीनुं गुरू हद का ।। बेहद का गुर नाय ।।  प्राम अं तीनुं गुरू हद का ।। बेहद का गुर नाय ।।  प्राम पान पिता,दाई,ब्राम्हण ये तिनो गुरु हदले सुख देनेवाले है । बेहद का सुख देनेवाले है । ब्राम्हण वेद के आधारसे नाम व जात बताते ।।।१९।।  पाम अं गुर तो सुखराम के ।। जती पढावे आण ।।  उमे वाद सतगुरु सुखरामजी महाराज बोले ब्राम्हण वेद के आधारसे जाती बताते इसप्रकार ब्राम्हण नाम व जाती का ज्ञान देते । इसप्रकार ये तिनो गुरु उपरोक्त वि है मोक्ष देनेवाले नही है ।।।१२।।  अायस सांमी ढुंढिया ।। बेरागी गुरू जाण ।।  अं बगसे सुखराम के ।। साँग पदार्थ आण ।।१३।।  पाम आयस, स्वामी ढुंढीया,बैरागी इन्हे गुरु कहते है आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज ब गुरु उनके साँग याने उनके देहके भेष का ज्ञान देते है ।।।१३।।  पाम अंकूं को गुण करत है ।। सब ही हद का आण ।।१४।।  इसप्रकार के ब्राम्हण पकड़के घट दर्शनी सभी गुरु देहके गुरु है । ये सभी हद मे रर एक मात्र गुण करते है ।।।१४।।  पाम पाम पाम पाम गुण करते है ।।।१४।।  पाम पाम पाम पाम गुण करते है ।।।१४।।	
बाम्हण गुरू सुखराम के ।। नाव पडायो आय ।।१०।।  पाम  पाम  पान पान पेता ने देह देनेका फल दिया,दाई ने शरीर को नहलाया,धुलाया,साफ रखनेका फल दिया,ब्राम्हण ने देह नाम देने का फल दिया इसप्रकार देह के तीन गु  ।।।१०।।  पाम  अे तीनुं गुरू हद का ।। बेहद का गुर नाय ।।  बाम्हण सुंण सुखराम के ।। जती बेद का कुवाय ।।११।।  पाम  पान पान पिता,दाई,ब्राम्हण ये तिनो गुरु हदके सुख देनेवाले है । बेहद का सुख देनेवाले है । ब्राम्हण वेद के आधारसे नाम व जात बताते ।।।१९।।  पाम  अो गुर तो सुखराम के ।। यां चीजा का जाण ।।१२।।  अादि सतगुरु सुखरामजी महाराज बोले ब्राम्हण वेद के आधारसे जाती बताते । इसप्रकार ब्राम्हण नाम व जाती का ज्ञान देते । इसप्रकार ये तिनो गुरु उपरोक्त हि है मोक्ष देनेवाले नही है ।।।१२।।  आयस सांमी ढुंढिया ।। बेरागी गुरू जाण ।।  अे बगसे सुखराम के ।। साँग पदार्थ आण ।।१३।।  पाम  अायस,स्वामी ढुंढीया,बैरागी इन्हे गुरु कहते है आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज ब गुरु उनके साँग याने उनके देहके भेष का ज्ञान देते है ।।।१३।।  पाम  पाम  पाम  पाम  अंकूं को गुण करत हे ।। सब ही हद का आण ।।१४।।  पाम  पाम  पाम  पाम  पाम  पाम  पाम  प	
माता-पिता ने देह देनेका फल दिया,दाई ने शरीर को नहलाया,धुलाया,साफ रखनेका फल दिया,ब्राम्हण ने देह नाम देने का फल दिया इसप्रकार देह के तीन गुंगा।।।।।।।।।।।।।।।।।।।।।।।।।।।।।।।।।।।	राम
रखनेका फल दिया,ब्राम्हण ने देह नाम देने का फल दिया इसप्रकार देह के तीन गुः ।।।१०।।  राम अं तीनुं गुरू हद का ।। बेहद का गुर नाय ।।  ब्राम्हण सुंण सुखराम के ।। जती बंद का कुवाय ।।१९।।  माता-पिता,दाई,ब्राम्हण ये तिनो गुरु हदके सुख देनेवाले है । बेहद का सुख देनेवाले है । ब्राम्हण वेद के आधारसे नाम व जात बताते ।।।१९।।  राम ब्राम्हण पांडे नांव रे ।। जती पढावे आण ।।  राम अं गुर तो सुखराम के ।। यां चीजा का जाण ।।१२।।  आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बोले ब्राम्हण वेद के आधारसे जाती बताते इसप्रकार ब्राम्हण नाम व जाती का ज्ञान देते । इसप्रकार ये तिनो गुरु उपरोक्त वि है मोक्ष देनेवाले नही है ।।।१२।।  अध्यस सांमी ढुंढिया ।। बेरागी गुरू जाण ।।  अं बगसे सुखराम के ।। साँग पदार्थ आण ।।१३।।  पम अं अवसे सुखराम के ।। साँग पदार्थ आण ।।१३।।  पम अं उनके साँग याने उनके देहके भेष का ज्ञान देते है ।।।१३।।  पट दर्शण बेराग रे ।। अं देह का गुर जाण ।।  अंकूं को गुण करत हे ।। सब ही हद का आण ।।१४।।  इसप्रकार के ब्राम्हण पकड़के षट दर्शनी सभी गुरु देहके गुरु है । ये सभी हद मे रर एक मात्र गुण करते है ।।।१४।।  पम पात्र गुण करते है ।।।१४।।	राम
भाग अं तीनुं गुरू हद का ।। बेहद का गुर नाय ।।  शाम्हण सुंण सुखराम के ।। जती बेद का कुवाय ।।१९।।  माता-पिता,दाई,ब्राम्हण ये तिनो गुरू हदके सुख देनेवाले है । बेहद का सुख देनेवाले है । ब्राम्हण वेद के आधारसे नाम व जात बताते ।।।१९।।  शाम्हण पांडे नांव रे ।। जती पढावे आण ।।  शाम्हण पांडे नांव रे ।। जती पढावे आण ।।  शाम्हण पांडे नांव रे ।। जती पढावे आण ।।  शाम्हण पांडे नांव रे ।। जती पढावे आण ।।  शाम्हण वेद के आधारसे जाती बताते ।।  शाम्हण नाम व जाती का ज्ञान देते । इसप्रकार ये तिनो गुरू उपरोक्त कि है मोक्ष देनेवाले नहीं है ।।।१२।।  शाम्हण आयस सांमी ढुंढिया ।। बेरागी गुरू जाण ।।  शोम अंवायस,स्वामी ढुँढीया,बैरागी इन्हे गुरू कहते है आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज बे गुरू उनके साँग याने उनके देहके भेष का ज्ञान देते है ।।।१३।।  शाम पाम अंकूं को गुण करत हे ।। सब ही हद का आण ।।१४।।  शाम एक मात्र गुण करते है ।।।१४।।  शाम शाम शाम शाम शाम हिंद का ।। दिन मे करो पचास ।।	
अं तीनुं गुरू हद का ।। बेहद का गुर नाय ।।  श्राम्हण सुंण सुखराम के ।। जती बंद का कुवाय ।।१९॥  माता-पिता,दाई,ब्राम्हण ये तिनो गुरु हदके सुख देनेवाले है । बेहद का सुख देनेवाले है । ब्राम्हण वेद के आधारसे नाम व जात बताते ।।।१९॥  श्राम्हण पांडे नांव रे ।। जती पढावे आण ।।  श्राम्हण पांडे नांव रे ।। जती पढावे आण ।।  अं गुर तो सुखराम के ।। यां चीजा का जाण ।।१२॥  आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बोले ब्राम्हण वेद के आधारसे जाती बताते हसप्रकार ब्राम्हण नाम व जाती का ज्ञान देते । इसप्रकार ये तिनो गुरु उपरोक्त हि है मोक्ष देनेवाले नहीं है ॥।१२॥  आयस सांमी ढुंढिया ।। बेरागी गुरू जाण ।।  अं बगसे सुखराम के ।। साँग पदार्थ आण ।।१३॥  श्राम अंग्रस सांमी इन्हे गुरु कहते है आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज ब गुरु उनके साँग याने उनके देहके भेष का ज्ञान देते है ॥।१३॥  स्ट दर्शण बेराग रे ।। अं देह का गुर जाण ।।  अंकूं को गुण करत है ।। सब ही हद का आण ।१४॥  इसप्रकार के ब्राम्हण पकडके षट दर्शनी सभी गुरु देहके गुरु है । ये सभी हद मे रर एक मात्र गुण करते है ॥।१४॥  स्ट दर्शण गुर देह का ।। दिन मे करो पचास ।।	थग राम
शाम्हण सुंण सुखराम के ।। जती बेद का कुवाय ।।११।।  गाम माता-पिता,दाई,ब्राम्हण ये तिनो गुरु हदके सुख देनेवाले है । बेहद का सुख देनेवाले है । ब्राम्हण वेद के आधारसे नाम व जात बताते ।।।११।।  श्राम्हण पांडे नांव रे ।। जती पढावे आण ।।  श्राम्हण पांडे नांव रे ।। जती पढावे आण ।।  श्राम्हण पांडे नांव रे ।। जती पढावे आण ।।  श्राम्हण पांडे नांव रे ।। जती पढावे आण ।।१२।।  आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बोले ब्राम्हण वेद के आधारसे जाती बताते इसप्रकार ब्राम्हण नाम व जाती का ज्ञान देते । इसप्रकार ये तिनो गुरु उपरोक्त वि है मोक्ष देनेवाले नहीं है ।।।१२।।  श्रायस सांमी ढुंढिया ।। बेरागी गुरु जाण ।।  श्रायस, स्वामी ढुंढिया, बैरागी इन्हे गुरु कहते है आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज ब गुरु उनके साँग याने उनके देहके भेष का ज्ञान देते है ।।।१३।।  श्रम् भट दर्शण बेराग रे ।। ओ देह का गुर जाण ।।  श्रेकूं को गुण करत है ।। सब ही हद का आण ।।१४।।  इसप्रकार के ब्राम्हण पकड़के षट दर्शनी सभी गुरु देहके गुरु है । ये सभी हद मे रर एक मात्र गुण करते है ।।।१४।।  श्रम एक मात्र गुण करते है ।।।१४।।	राम
पाम पान - पिता, दाई, ब्राम्हण ये तिनो गुरु हदके सुख देनेवाले हैं । बेहद का सुख देनेवाले हैं । ब्राम्हण वेद के आधारसे नाम व जात बताते ।।।११।।  पाम अे गुर तो सुखराम के ।। यां चीजा का जाण ।।१२।। आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बोले ब्राम्हण वेद के आधारसे जाती बताते इसप्रकार ब्राम्हण नाम व जाती का ज्ञान देते । इसप्रकार ये तिनो गुरु उपरोक्त हि है मोक्ष देनेवाले नहीं है ।।।१२।।  पाम अे बगसे सुखराम के ।। साँग पदार्थ आण ।।१३।। आयस सांमी ढुँढिया ।। बेरागी गुरू जाण ।। ओ बगसे सुखराम के ।। साँग पदार्थ आण ।।१३।। आयस, स्वामी ढुँढीया, बैरागी इन्हे गुरु कहते है आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज ब गुरु उनके साँग याने उनके देहके भेष का ज्ञान देते है ।।।१३।।  पाम अंकूं को गुण करत है ।। सब ही हद का आण ।।१४।। इसप्रकार के ब्राम्हण पकड़के षट दर्शनी सभी गुरु देहके गुरु है । ये सभी हद मे रस एक मात्र गुण करते है ।।।१४।।  पाम पाम पाम पाम पाम पाम पाम पाम पाम पा	राम
है । ब्राम्हण वेद के आधारसे नाम व जात बताते ।।।११।।  शाम अं गुर तो सुखराम के ।। यां चीजा का जाण ।।१२।।  शाम आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बोले ब्राम्हण वेद के आधारसे जाती बताते हसप्रकार ब्राम्हण नाम व जाती का ज्ञान देते । इसप्रकार ये तिनो गुरु उपरोक्त वि है मोक्ष देनेवाले नही है ।।।१२।।  शाम आयस सांमी ढुंढिया ।। बेरागी गुरु जाण ।।  शाम अं बगसे सुखराम के ।। साँग पदार्थ आण ।।१३।।  शाम अं बगसे सुखराम के ।। साँग पदार्थ आण ।।१३।।  शाम अं बगसे सुखराम के ।। साँग पदार्थ आण ।।१३।।  शाम अंकूं को गुण करत है ।। अं देह का गुर जाण ।।  शेकूं को गुण करत है ।। सब ही हद का आण ।।१४।।  इसप्रकार के ब्राम्हण पकड़के षट दर्शनी सभी गुरु देहके गुरु है । ये सभी हद मे रर एक मात्र गुण करते है ।।।१४।।  शाम अंद दर्शण गुर देह का ।। दिन मे करो पचास ।।	नही राम
ब्राम्हण पांडे नांव रे ।। जती पढावे आण ।।  अं गुर तो सुखराम के ।। यां चीजा का जाण ।।१२।।  आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बोले ब्राम्हण वेद के आधारसे जाती बताते  सम इसप्रकार ब्राम्हण नाम व जाती का ज्ञान देते । इसप्रकार ये तिनो गुरु उपरोक्त ि  है मोक्ष देनेवाले नहीं है ।।।१२।।  आयस सांमी ढुंढिया ।। बेरागी गुरू जाण ।।  अं बगसे सुखराम के ।। साँग पदार्थ आण ।।१३।।  यम आयस,स्वामी ढुँढीया,बैरागी इन्हे गुरु कहते है आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बं  राम गुरु उनके साँग याने उनके देहके भेष का ज्ञान देते है ।।।१३।।  पम अंकूं को गुण करत हे ।। सब ही हद का आण ।।१४।।  इसप्रकार के ब्राम्हण पकड़के षट दर्शनी सभी गुरु देहके गुरु है । ये सभी हद मे रर एक मात्र गुण करते है ।।।१४।।  पम प्रम प्रकार गुण करते है ।।।१४।।  पम प्रम प्रकार गुण करते है ।।।१४।।	राम
आदि सतगुरु सुखराम के ।। या वाजा को जाण ।। १२।।  राम आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बोले ब्राम्हण वेद के आधारसे जाती बताते  राम इसप्रकार ब्राम्हण नाम व जाती का ज्ञान देते । इसप्रकार ये तिनो गुरु उपरोक्त वि  है मोक्ष देनेवाले नहीं है ।।।१२।।  अध्यस सांमी ढुंढिया ।। बेरागी गुरू जाण ।।  ओ बगसे सुखराम के ।। साँग पदार्थ आण ।।१३।।  यम आयस,स्वामी ढुँढीया,बैरागी इन्हे गुरु कहते है आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज ब  राम गुरु उनके साँग याने उनके देहके भेष का ज्ञान देते है ।।।१३।।  पम अंकूं को गुण करत है ।। सब ही हद का आण ।।१४।।  राम इसप्रकार के ब्राम्हण पकड़के षट दर्शनी सभी गुरु देहके गुरु है । ये सभी हद मे रर राम एक मात्र गुण करते है ।।।१४।।  पम पट दर्शण गुर देह का ।। दिन मे करो पचास ।।	राम
राम इसप्रकार ब्राम्हण नाम व जाती का ज्ञान देते । इसप्रकार ये तिनो गुरु उपरोक्त वि है मोक्ष देनेवाले नही है ।।।१२।।  श्रायस सांमी ढुंढिया ।। बेरागी गुरू जाण ।।  श्रो बगसे सुखराम के ।। साँग पदार्थ आण ।।१३।।  श्रायस, स्वामी ढुँढीया, बैरागी इन्हे गुरु कहते है आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज ब गुरु उनके साँग याने उनके देहके भेष का ज्ञान देते है ।।।१३।।  श्राय प्रम अंकूं को गुण करत हे ।। सब ही हद का आण ।।१४।।  इसप्रकार के ब्राम्हण पकड़के षट दर्शनी सभी गुरु देहके गुरु है । ये सभी हद मे रर एक मात्र गुण करते है ।।।१४।।  स्व दर्शण गुर देह का ।। दिन मे करो पचास ।।	
त्राम सामी दुंदिया ।। बेरागी गुरू जाण ।।  अ बगसे सुखराम के ।। साँग पदार्थ आण ।।१३।।  राम आयस, स्वामी ढुँढीया, बैरागी इन्हे गुरु कहते है आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बे गुरु उनके साँग याने उनके देहके भेष का ज्ञान देते है ।।।१३।।  पम अंकूं को गुण करत हे ।। सब ही हद का आण ।।१४।।  राम अंकूं को गुण करत हे ।। सब ही हद का आण ।।१४।।  राम एक मात्र गुण करते है ।।।१४।।  पम एक मात्र गुण करते है ।।।१४।।  पम एक प्रांत्र गुण करते है ।।।१४।।	
आयस सांमी ढुंढिया ।। बेरागी गुरू जाण ।।  अं बगसे सुखराम के ।। साँग पदार्थ आण ।।१३।।  राम आयस,स्वामी ढुँढीया,बैरागी इन्हे गुरू कहते है आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बं गुरु उनके साँग याने उनके देहके भेष का ज्ञान देते है ।।।१३।।  पाम अंकूं को गुण करत हे ।। सब ही हद का आण ।।१४।।  राम अंकूं को गुण करत हे ।। सब ही हद का आण ।।१४।।  राम एक मात्र गुण करते है ।।।१४।।  पाम पट दर्शण गुर देह का ।। दिन मे करो पचास ।।	गाक राम
अं बगसे सुखराम के ।। साँग पदार्थ आण ।।१३।।  गम आयस, स्वामी ढुँढीया, बैरागी इन्हे गुरु कहते है आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बं  गुरु उनके साँग याने उनके देहके भेष का ज्ञान देते है ।।।१३।।  पट दर्शण बेराग रे ।। अे देह का गुर जाण ।।  अंकूं को गुण करत हे ।। सब ही हद का आण ।।१४।।  इसप्रकार के ब्राम्हण पकड़के षट दर्शनी सभी गुरु देहके गुरु है । ये सभी हद मे रर एक मात्र गुण करते है ।।।१४।।  पम पट दर्शण गुर देह का ।। दिन मे करो पचास ।।	राम
आयस,स्वामी ढुँढीया,बैरागी इन्हे गुरु कहते है आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज ब गुरु उनके साँग याने उनके देहके भेष का ज्ञान देते है ।।।१३।। सट दर्शण बेराग रे ।। ओ देह का गुर जाण ।। अंकूं को गुण करत हे ।। सब ही हद का आण ।।१४।। इसप्रकार के ब्राम्हण पकड़के षट दर्शनी सभी गुरु देहके गुरु है । ये सभी हद मे रर एक मात्र गुण करते है ।।।१४।। सम पट दर्शण गुर देह का ।। दिन मे करो पचास ।।	राम
गुरु उनके साँग याने उनके देहके भेष का ज्ञान देते है ।।।१३।।  पम  अंकूं को गुण करत हे ।। सब ही हद का आण ।।१४।।  इसप्रकार के ब्राम्हण पकड़के षट दर्शनी सभी गुरु देहके गुरु है । ये सभी हद मे रर एक मात्र गुण करते है ।।।१४।।  पम  पम  पम  पम  पट दर्शण गुर देह का ।। दिन मे करो पचास ।।	ले ये राम
अंकूं को गुण करत है ।। सब ही हद का आण ।।१४।। इसप्रकार के ब्राम्हण पकड़के षट दर्शनी सभी गुरु देहके गुरु है । ये सभी हद मे रर एक मात्र गुण करते है ।।।१४।। पम पट दर्शण गुर देह का ।। दिन मे करो पचास ।।	राम
इसप्रकार के ब्राम्हण पकड़के षट दर्शनी सभी गुरु देहके गुरु है । ये सभी हद मे रर एक मात्र गुण करते है ।।।१४।। पम पट दर्शण गुर देह का ।। दिन मे करो पचास ।।	राम
एक मात्र गुण करते है ।।।१४।।  पम  पट दर्शण गुर देह का ।। दिन मे करो पचास ।।	ोका राम
षट दर्शण गुर देह का ।। दिन मे करो पचास ।।	नका
	राम
बिन सत्तगुरू सुखराम केहे ।। झूठ मुगत की आस ।।१५।।	राम
राम	राम

अर्थकर्ते : सतस्वरूपी संत राधाकिसनजी झंवर एवम रामरनेही परिवार, रामद्वारा (जगत) जलगाँव - महाराष्ट्र

राम	।। राम नाम लो, भाग जगाओ ।। ।। राम नाम लो, भाग जगाओ ।।	राम
राम	इसप्रकार ये षटदर्शन(जोगी,जंगम,सेवडा,सन्यासी,फकीर,ब्राम्हण)गुरु देह गुरु है,ये यदी	
राम	दिनके पचास भी किए तो मुक्ती होगी । ये अगर दिन के पचास भी किए तो भी मोक्ष	
	नहीं होगा । ये सब गुरु मोक्ष की झुठी आस लगाते । मोक्ष सिर्फ सतगुरु करने पे ही	राम
राम	मिलता है ।।।१५।।	
राम	जंतर अंतर अकल रे ।। लख चीजा दे आण ।।	राम
राम	<b>भेद बिना सुखराम के ।। सब देह का गुरू जाण ।।१६।।</b> ये हद के गुरु जंतर मंतर,अक्कल ऐसी तीन लोक चौदा भवन तक लक्षावधी पर्चे	राम
राम	चमत्कार की चीजा लाकर बताते । इनके पास काल से छुटनेका भेद नही रहता । इसलिए	
राम	ये सभी देह के गुरु जाणिए ।।।१६।।	राम
राम	देह का गुरू सुं मुगत रे ।। सुण देही की होय ।।	राम
राम	आतम की सुखराम केहे ।। सत्तगुर के संग जोय ।।१७।।	राम
राम	इन देही के गुरुसे देही की मुक्ति होती,जिवात्मा की नही होती है। जीवात्मा की मुक्ति	गाम
	चाहिए हो तो सतगुरु का संग करना चाहिए ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बोले	
राम	1901	राम
राम	भेद बिना सुखराम के ।। सब देह का गुरू होय ।।	राम
राम	करणी की सुण क्या चली ।। नाव रटावे कोय ।।१८।।	राम
राम	काल से छुटने के भेद बिना आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बोले,सभी गुरु देह के गुरु है । ये गुरु करणीयाँ सिखाते है । यहाँ तक की हदतक पहुँचने का नाम भी सिखाते है	राम
राम	ह । य गुरु करणाया ।संखात ह । यहां तक का हदतक पहुंचन का नाम मा ।संखात ह परन्तु हदके बाहर सुखके बेहद मे नहीं पहुँचाते ।।।१८।।	राम
राम	सत्तगुर हे इण जीव का ।। सुणज्यो ग्यानी लोय ।।	राम
राम	दूजा गुरू सुखराम के ।। सब देही का होय ।।१९।।	राम
	सभी ज्ञानी सुनो इस जीवका गुरु सिर्फ सतगुरु है,दुजे सभी गुरु देहीके है ऐसा आदि	
राम	सतगुरु सुखरामजी महाराज बोले ।।।१९।।	राम
राम	मोख मिलण की चाय व्हे ।। तो सत्तगुर कीज्यो आय ।।	राम
राम	दुजा गुर सुखराम के ।। सब ही कर्म उपाय ।।२०।।	राम
राम	आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज सभी नर नारीयों को बोले की,मोक्ष मिलने की चाहणा	
राम	है तो सतगुरु को खोजकर धारण करो । सतगुरु छोड़के दुजे सभी गुरु काल के मुख मे	राम
राम	रखनेवाले कर्मोका उपाय है ।।।२०।। ।। दनि सानास को शंग संगरण ।।	राम
राम	।। इति सप्तगुरा को अंग संपूरण ।।	राम
राम		राम
राम		राम
	अर्थकर्ते : सतस्वरूपी संत राधाकिसनजी झंवर एवम् रामरनेही परिवार, रामद्वारा (जगत) जलगाँव – महाराष्ट्र	